1842 भस

अंग्रेजों द्वारा प्रचारित भारतका झुठा इतिहास

वमंगल ग्रन्थमाला

१३

वेणीशंकर मुरारजी वासु

कमल प्रकाशन ट्रस्ट

१९१

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

अंग्रेज तो इस देश में से चलते बने, लेकिन जाने से पहले विश्वविद्यालयी शिक्षा द्वारा हजारों देशी अंग्रेज उन्होंने तैयार कर दिए थे। इस देश की धरती पर निरंतर अपना स्वामित्व बनाए रखने के लिए इनके पास एक ही उपाय था कि "देशकी प्रजा को सभी तरह से बरबाद कर दो, इसलिए उनकी संस्कृति का सर्वनाश करो!"

यह कार्य विदेशी लोग करने जायँ तो यहाँ की प्रजा क्रुद्ध होकर विप्लव कर बैठेगी, इसीलिए देश के लोगों के हाथों ही इस सर्वनाश के कार्यक्रम पर अमल करना अनिवार्य था। इसलिए देशी अंग्रेजों को तैयार किया गया। आज तो इन उपाधिधारक, पश्चिमपरस्त देशी अंग्रेजों की संख्या लाखों तक पहुंच गई है।

इन देशी अंग्रेजों ने जाने-अनजाने उनको प्राप्त हुए शैक्षिक पश्चिमा उत्तराधिकार के कारण संस्कृति के सभी क्षेत्रों के मूल पर आघात कर दिया है। मोक्षलक्ष्यी संस्कृति-वृक्ष के सभी अंगो को उन्होंने जड से हिला दिया है, । इन शिक्षितों को शिक्षित कहा जाए या नहीं यह भी एक प्रश्न है, क्यों कि इसी तरह की उनकी पश्चिमपरस्त नीति-रीतियाँ देखने को मिलती हैं।

श्री वेणीशंकर मुरारजी वासु इस विषय की अच्छी जानकारी रखते हैं। उनका प्रत्येक विचार भिन्न-भिन्न विषयों पर बेधक प्रकाश डालता है। उदाहरणों, दलीलों और आँकडों से उनके प्रत्येक लेख को बल प्राप्त होता है। निश्चय ही ये लेख आध्यात्मिक भूमिका पर नहीं लिखे गए है, लेकिन आध्यात्मिक जीवन जीने का जन्मसिद्ध अधिकार धारण करनेवाली आर्यावर्त की महाप्रजा के सर्वनाश के घातकी और रहस्यमय शस्त्रों की पोल वे खोल देते हैं। इस रीति से आर्य महाप्रजा की महासंतों द्वारा दी हुई धर्मप्रदान चार पुरुषार्थों की संस्कृति की पुनः स्थापना कर इस महाप्रजा के आध्यात्मिक स्तरों को मजबूत करने के प्रयत्न में ये लेख अपना विशिष्ट सहयोग प्रदान करते है।

श्री वासु बताते है कि सांस्कृतिक तत्वों को पश्चिम-परस्त रहस्यमय और अनपढ नीतिरीति के वर्तमान वेग से भी नष्ट करने का कार्य चालू रखा जाए तो भारतीय प्रजा की आयु शायद सौ-दो सौ वर्ष से अधिक नहीं रहेगी!

श्री वासु की विचारधारा भारतीय प्रजा के किसी भी कक्षा के नेताओं के रुपमें गिने जानेवाले सभी भाइयों तक पहुचे, तो मुझे लगता है कि उनके मस्तिष्कों में विदेशी एजेण्टों ने जो गलत विचार भर दिए हैं, जिनके द्वारा प्रजाके तमाम जीवनस्तर जड़ से हिल उठे हैं, वे सब जड-मूल से उखड जाएँगे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विश्वमाला ग्रंथमाला : पुस्तक—१३

अंग्रेजों द्वारा प्रचारित भारत का झूठा इतिहास

श्री वेणीशंकर मुरारजी वासु

मूल्य : रु. २–००

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कमल प्रकाशन ट्रस्ट का नम्र निवेदन

भारतीय प्राचीन परंपराओं को पुनर्जीवित करनेवाली श्री वेणीशंकर मुरारजी वासु की चिन्तनधारा को हम प्रकाशित कर रहे हैं। लेखकश्री ने आर्यावर्त की मोक्षलक्ष्मी संस्कृति के एक अंग–अर्थव्यवस्था–को मुख्य रूप से आत्मसात् किया है। इस विषय में उन्होंने आश्चर्यजनक विकास किया है, यह बात उनके विचारों से आसानी से कही जा सकती है। भारत की अर्थव्यवस्था में गायप्रधान पशुओं की अहिंसा मुख्य रूप से कार्य करती है –लेखक दृढतापूर्वक यह बात मानते है। इस पुस्तिका के द्वारा विशिष्ट कोटि का प्रतिभात्र प्रज्ञा में प्रकट हो तो लेखक के विचारों को व्यवस्थित आकार देकर प्रकट करने की हमारी इच्छा है। बड़ी मात्रा में प्रचार हो इस हेतु से आर्थिक हानि सहकर यह ट्रस्ट इस पुस्तिका का प्रकाशन करती है। अपने विचारों को प्रकाशित कराने को अनुमति देने के लिए हम श्री वासु के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

पाठकों को नम्र सूचना :

इन पुस्तिकाओं में प्रस्तुत हुए लेखकश्री के विचारों के बारे में पत्रव्यवहार लेखकश्री के साथ ही किया जाए। सभी विचारों का उत्तरदायित्व उनका है।

लेखक का पता–**श्री वेणीशंकर मुरारजी वासु**

बजाज वाडी, स्टेशन रोड, सांताक्रूझ पश्चिम,

बंबई–५४

प्रकाशक : कमल प्रकाशन ट्रस्ट,
जीवतलाल प्रतापशी संस्कृति भवन
२७७७, निशापोल, झवेरीवाड, रिलीफ रोड,
अहमदाबाद

प्रथम संस्करण
नकल १०००
संवत २०४०
ता. २८–२–१९८४

मुद्रक : श्री राजुभाई सी. शाह
केनिमेक प्रिन्टर्स मामुनायकनी पोळ,
गांधीरोड, अहमदाबाद.

मूल्य : रु. २–००

हिन्दी संस्करण :
श्री कान्तिभाई पी. याज्ञिक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

- ☐ **भारत के बारे में सरासर झूठों का अंग्रेज इतिहासकारों द्वारा किया प्रचार !**
- ☐ **पश्चिम की जंगली, शोषक और हिंसक अर्थव्यवस्था को देश में से बिना हटाए भारतीय प्रजा कभी सुखी न बन पाएगी।**
- ☐ **शूद्र बंधुओं की दर्दनाक हालत किसने की है? उसे जाहिर करने का समय आ पहुँचा है।**

☐ ☐ ☐

☐ झूठा इतिहास पढ़ने की मजबूरी !

१९२०–'२१ में जब गांधीजी ने खद्दर–प्रचार को बढ़ावा दिया और देश भर में एक करोड चरखे चलाने का आन्दोलन आरंभ किया, तब ज्यादातर उद्योगपतियों और साम्यवादियेंाने होहल्ला मचा दिया कि गांधी, राष्ट्र को पुनः पिछडे अवस्था में ले जाना चाहता है।

प्रश्न यह है कि देश में जंगली हालत कभी थी क्या? और यदि थी तो कब थी? कैसी थी?

अंग्रेजों यहाँ शासनारूढ होने के बाद सबसे अधिक करुणाजनक–खतरनाक बात यह हुई कि हमें अपने ही देश का सही इतिहास भूला देने के अथक प्रयत्न किए गए। अंग्रेजों द्वारा लिखे इतिहास को पढ़ने के लिये हमारे बच्चे विवश हुए।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

□ इतिहास का गौरव !

जो प्रजा अपने राष्ट्र का इतिहास भूल पाती है, वह अपनी स्थिरता गँवा देती है और उस की हालत जहाज के पीछे लगी नौका-सी हो जाती है ।

जो प्रजा अपना गौरव खो देती है, उस प्रजा का आदमी आदमी नहीं रह पाता; लेकिन ध्येयहीन पशु-सा बन जाता है।

इतिहास मनुष्य को उसके गौरव का भान कराता है–सुधि दिलाता है । गौरव और जिंदादिली से जीवन गुजारने की प्रेरणा देता है ।

इतिहास प्रज़ा को उसके पुरोगामी लोगों की भव्यतम सिद्धियों के कारणों की छानबीन कर समझने का सामर्थ्य देता है और पूर्वजों द्वारा की गई भूलों से बचने की सावधानी देता है ।

अंग्रेजोंने हमें, हमारे देश के सही इतिहास को हमारी नजरों से हटाकर, झूठे दंभी इतिहास के पठन–पाठन द्वारा हमें चक्कर में डाल दिए थे ।

□ 'आर्य बाहर से आए हैं'—यह अंग्रेजों का एक बतंगड है !

इस महान आर्यप्रजा की उत्पत्ति, यहीं इसी राष्ट्र में हुई थी । हमारे शास्त्रों के आधार पर लाखों साल पहले यहाँ जन्म धारण कर यहीं रह पाए हैं ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आर्य प्रजा सुसंस्कृत, चरित्रशील और मोक्षलक्षी भावना-वाली थी। उस प्रजा के पास धार्मिक ज्ञान था।

वेद का महत्त्व घटाने के लिए और बाईबल को वेद-ग्रंथों की अपेक्षा उत्तम बताने के लिए मेक्समूलर एवं उनके समकालीन यूरपी विद्वानों ने 'वेद तीन हजार वर्षों से अधिक पुराने नहीं है।' ऐसा प्रचार शुरू किया।

शासन संचालित शालाओं में हिन्दू विद्यार्थियों को सम-झाया गया कि—'वेद तीन हजार साल पुराने हैं और आर्य प्रजा यहाँ की मूलभूत निवासी नहीं थीं वह उत्तर ध्रुव की ओर से गायों के झुंड लेकर और चारे की खोज में मारी मारी फिरती इस देश में आ पहुँची और बाद में कई अन्य प्रजाएँ आकर, उन में संमिलित हो गई और आर्य प्रजा, कई भटकती घुमक्कड टोलियों का मिलाझुला मेला-सी बन गई।'

उनका यह प्रचार एक कल्पित बतंगड ही है। उसके पीछे कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। हमें गौरवहीन दिखाने की द्वेषबुद्धि ही इस प्रचार का मुख्य कारण है और मेक्समूलर के पत्र, उसकी वेदधर्म के प्रति जो द्वेषबुद्धि थी, उसे प्रगट कर देते हैं।

☐ आर्य प्रजा यहीं पैदा हुई है।

आर्य प्रजा यहीं थी और यहीं पली–फैली थी। उसने अपने वर्णों और धर्मों के आधार पर अपनी मोक्षलक्षी व्य-वस्था निश्चित की थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सामाजिक व्यवस्था के लिए प्रजा चार विभागो में विभक्त थो :–(१) ब्राह्मण (२) क्षत्रिय (३) वैश्य और (४) शूद्र। ये चारों वर्ण एक ही प्रजा के चार विभाग थे और उन में से प्रत्येक को अलग अलग कर्तव्य सौंप दिए गए थे।

ब्राह्मण विद्याभ्यास करते और पढ़ाते। प्रजा धर्म की मर्यादा में बनी रहे, उसका खयाल रखते और प्रत्येक वर्ण को उनके कर्तव्यों के लिये सावधान बनाए रखते थे।

क्षत्रिय देश के आन्तर–बाह्य शत्रुओं से प्रजा की रक्षा करते थे।

वैश्य अर्थव्यवस्था निभाते थे और शूद्र अन्य तीन वर्ण देश को सुरक्षित और समृद्ध बना कर मोक्षलक्षी प्रवृत्तियाँ जारी रख सके, उस की सुविधा का खयाल कर, प्रजा की सेवा करते।

यह चौथा वर्ग कारीगरों का था। जो अपनी बुद्धि और श्रम का समन्वय कर राष्ट्र और समाज की सेवा करते और बदले में वे सेवा का पुरस्कार प्राप्त करते।

अंग्रेजी शिक्षाने इस सेवा का गलत अर्थ बता कर यह चौथा वर्ग मानों गुलाम हो और तीनों वर्ण द्वारा शोषित, कुचला, पददलित गुलाम वर्ग हो, वैसा शब्दचित्र रखकर बाद में शूद्र यानी हरिजन ऐसा दिखावा खड़ा कर दिया।

□ गुलामी तो ओर जगह थी !

लेकिन सेवा एक अलग चीज है और गुलामी यह भिन्न

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चीज है । गुलामी की प्रथा तो आर्य प्रजा के सिवा, मध्य एशिया और यूरप को प्रजाओं में थी । उपरान्त, गुलामों को जीनेका ही अधिकार न था । उनका मालिक अपनी इच्छानुसार क्रूरता के साथ गुलाम को ख़त्म कर सकते थे।

मेंगोलों, आरबों, यूरोपियनों एवं अफ्रिकनों को ऐसा मौका मिल जाता तो, भारत के नाविकों को और व्यापारियों को भी यकायक हमला कर कैद कर लेते । ऐसे लोगों को कैद कर बेचनेवाली टोलियाँ, गुलामों का व्यापार करती थीं ।

कभी कभी तो, सारा परिवार ही कैद हो जाता । पकडे गए गुलामों को पंक्तिबद्ध खडे कर उनका सार्वजनिक रूप में नीलाम किया जाता । किसी समय पत्नी को कोई मेंगोल उठा जाता तो पति को कोई स्पेनियार्ड ले जाता और पुत्र को कोई आरब खरीद लेता, ऐसा भी हो पाता । खरीददार आदमी उस गुलाम के शरीर का संपूर्ण मालिक बन जाता और खरीदने के बाद उसे शृंखलासे बाँध कर घसीट कर ले जाया जाता ।

यदि जहाजों में ले जाए जाते तो, शृंखलाओंसे बाँधकर, अनाज की बोरियों की तरह एक दूसरे के उपर डालकर लिए जाते थे ।

इच्छा के मुताबिक उनके पास सख्त काम कराया जाता और मालिक को इच्छा के अनुसार हो खाना भो दिया जाता था ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गुस्से होने पर फटकारे भी जाते थे। कई बार स्त्रीकी नजर के सामने उसके पति को, पति की नजरों के सामने पत्नी को और पति-पत्नी की नजरों के सामने उसके पुत्र को कोडोंसे फटकार फटकार मार दिये जातें। पुरूषों की नजरों के सामने ही उनकी पत्नियों के साथ शरीर समागम किया जाता।

ये सारी कथाएँ हृदयद्रावक थी। उसीका नाम गुलामी था।

उनकी इन निर्दय पाशवी लीलाओं का ढाँक-ढुराव कर, उन्होंने शूद्रों को तीनों वर्णों के गुलाम के रूपमें चित्रित किये और नई पीढी में सवर्णों और हरिजनों के बीच भारी भेदभाव पैदा कर दिया।

☐ शूद्र गुलाम न थे !

लेकिन शूद्र वास्तव मे गुलाम न थे। समाज में तीनों वर्णों के समकक्ष, उपयोगी और आदरणीय स्थान प्राप्त करने-वाले मानवी थे। वे समाज की सेवा करने और सेवा के उपलक्ष्यमें उन्हें योग्य पुरस्कार मिल पाता। वह पुरस्कार नोटों के बंडल के रूप में नहीं; लेकिन वस्तुओं के रूपमे मिल पाता था।

उदाहरण स्वरूप, किसान को सारा वर्ष कृषि के उपयोगी और घरेलू चीजों को लोहार तैयार कर देता। बदले में किसान खेतमें पके अनाज मेंसे सौ मनों के बदले में अमुक प्रतिशत अनाज का हिस्सा प्रेमसे दे देता था।

क्षत्रिय को कारीगर शस्त्र-हथियार बना दे पाते। कपडे सी दे, हजामत कर दे या लड़ाईमें हुए जख़्मों को जोड दे,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तलवार का म्यान बना दे या पाँवके जूते बना दे। इन तमाम प्रकार के कारीगरों को क्षत्रिय को कृषि–पैदाइश में से निश्चित किया हिस्सा आप ही मिल जाता था।

इस प्रकार हर प्रकार के कारीगर, तीनों वर्णों की जरूरतों को पूरी करते और उनके पास से अपनी वार्षिक जरूरतें प्राप्त करते। वास्तव में तो वे तीनों वर्णों की आमदनी में सक्रिय साझेदार जैसे थे। इस प्रथा को–परंपरा को 'गुलामी' कैसे कही जाय !

☐ कैसे अनोखे झूठ !

ब्राह्मण अपरिग्रही थे। उनकी जरूरतें बहुत मामूली थी। वर्तमान प्रजा की तरह वे विलासी न थे। और समृद्धि का प्रदर्शन करने जैसा जीवन यापन करते न थे। लेकिन इससे उन्हें जंगली थोडे कहे जा सकते थे ?

ऋषिमुनि तपश्चर्या करने, योगसाधना करने के लिए, जंगल की एकान्त, गुफाओं में निवास करते थे। इसी कारण उन्हें जंगली माने जाएँ ?।

ये संन्यासी वेदज्ञाता थे। अतः भवननिर्माण का पूरा ज्ञान उन्हें था; लेकिन अंग्रेजोंने हमें पढ़ाया कि, भवननिर्माण में वे पिछड़े थे, अतः वे गुफाओं में निवास करते थे।

अंग्रेजी शिक्षा द्वारा अंग्रेज़ोंने हमे बताया कि, "आपके पुरोगामियों की घुमक्कड टोलियों भटकती यहाँ आ पहुँची और यहाँ की मूलनिवासी द्रविड़ प्रज़ा को हराकर इस देशकी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मालिक बन बैठी। द्रविड प्रजा तो शिक्षित और संस्कृत थी। लेकिन आपके पुरोगामी जंगली और कायर थे। आंधी से वृक्ष गिर जाते तो वृक्षों से भयभीत होकर उनकी पूजा करने लग जाते। नदियों की बाढ़ों से भयभीत होकर नदीतटों के पूजा में बैठ जाते। जंगलो में दावाग्नि लग जाती तो डर कर अग्निपूजा करते थे। अग्नि प्रगट करने का ज्ञान नहीं था, अतः वे लोग चौबीसों घंटे अग्नि को घरमें सम्हाल कर रखते।

इस प्रकार हमारे ऋषियुनियों को और समस्त आर्य प्रजा को कायर, धुमक्कड और जंगली जीवनयापन करनेवालों के रूपमें चित्रित किए। और अफसोस की बात तो यह है कि गत २०० वर्षों से हम इस झूठे और द्वेषपूर्ण इतिहास का पठन–पाठन करते चले आ रहे हैं; यद्यपि कई जगह गलत इतिहास चित्रित करने में वे भी चकरा गए है।

☐ वृक्षों की पूजा किस लिए ?

वृक्ष को कई लोग पूजते थे और आज भी पूजते है, यह उनसे डर कर नहीं; लेकिन उनकी उपयोगिता समझकर ही पूजते हैं। वृक्षों की महत्ता समझकर उनकी पूरी देखभाल की जाती थी। 'वृक्षों में चैतन्य है।' ऐसा ज्ञान होने के कारण हरे वृक्ष को काटने की मनाई हिन्दू धर्म में फरमाई गई है। प्रत्येक वृक्ष की भी पूजा की नहीं जाती। केवल बरगद, पीपल, उमर, शमी जैसे वृक्षों की ही पूजा की जाती है; क्योंकि वे ज्यादा उपयोगी वृक्ष हैं और सूखे-अकाल के समय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उनका नाश न हो अतः उसकी विधिपूर्वक पूजा का प्रकार निश्चित कर, दुष्काल विरुद्ध उसकी रक्षा की गई है ।

वैदिक लोग नदियों की पूजा करते थे । आज भी हम पूजते हैं, लेकिन नदियाँ लोक–माताएँ हैं । पशु-पक्षी-मानव की जीवन-धरित्री हैं, अतः पूजते हैं । वे सही अर्थ में लोक–माताएँ बनी रही हैं ।

☐ अग्निपूजा किस लिए ?

अग्नि कैसे प्रगट की आती है, उसका पूरा ज्ञान आर्यों को था । वे मंत्रबलसे भी अग्नि पैदा करते थे और लकडियों के घर्षण द्वारा या लोहे के घर्षण द्वारा भी अग्नि प्रगट कर देते थे ।

वेद धर्मने अग्नि को ईश्वर का मुख बताया है; इसी लिए उनके अनुयाई उसमें आहुति अर्पण करते थे ।

आर्यों की विवाहविधि अग्नि के साक्ष्य में संपन्न होती थी और जो विवाह अग्नि की साक्षी में हो पाते थे, उस अग्नि की धरमें रक्षा की जाती थी । उसमें सुबह-शाम दोनों समय मंत्रोच्चारपूर्वक घी और क्षीर की १०८ आहुतियाँ दी जाती थीं और मृत्यु के बाद उसी अग्नि द्वारा अग्निदाह किया जाता था । अतः अग्नि को घरमें स्थाई रखने में, उससे डरनेका कारण न था और न ही अग्नि प्रगट करने का असामर्थ्य था ।

फिर भी आर्य महाप्रजा की अनेक प्रवृत्तियों और वर्णव्य–

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वस्था को विकृत रूप देकर प्रजा को गलतफहमी के चक्करमें डालने में अंग्रेज लोग अधिकांश सफल हो पाए हैं ।

☐ संस्कृत मानवों को, अंग्रेज लोग बर्बरता की ओर धकेल गए।

इस पृथ्वी पर का आदमी, संस्कारसंपन्न था। उसकी सारी प्रवृत्तियाँ मोक्षलक्षी थीं ।

जैसे जैसे समय परिवर्तन होता गया, वैसे वैसे उनकी लालसाएँ बढ़ती गई और मोक्षलक्षी भावनाएँ क्रमशः सकुचाती रहीं । युग बीत चले । मानव धीरे धीरे मंदबुद्धि और क्षीणवीर्य होता चला ।

लेकिन ई. स. १७५७ में अंग्रेजोंने प्लासी का युद्ध छल-प्रपंच से जीत लिया और उससे ज्यादातर कूडकपट द्वारा समस्त बंगाल पर कब्जा कर लिया तब से उन्होंने हमें लगातार बर्बरता की ओर ही धकेल दिए हैं ।

हमारे धर्मग्रंथों के अनुसार आर्यमानव, महामानव संस्कारी, संयमी और मोक्षलक्षी भावनावाले थे । और जैसे जैसे लालसा बढ़ती गई, भोगविलास बढ़ते गए और भोगलक्षी भावना मंद होती चली, वैसे वैसे वे पंगु और क्षुल्लक बनते गए ।

जब कि यूरप के वैज्ञानिक कहते है कि आरंभ के आदि मानव बर्बर, अज्ञान और जानवर जैसे थे । हम क्रमशः सुधरते गए, सुसंस्कृत बनते गए और विज्ञान में आगे बढ़ते गए।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

□ बर्बर कौन ? अत्याचारी कौन ?

वे लोग अपने पूर्वजों के लिए बर्बर शब्द का प्रयोग करें तो हमें कोई आपत्ति नहीं; क्योंकि वे केवल अपना पेट पालने के लिए और क्षुधा-शान्ति के लिए, जानवरों की तरह प्राणियों को ख़त्म कर देते होंगे; लेकिन उनके ये तथाकथित संस्कृत वंशज़ तो विज्ञान का उपयोग कर करोडों टन अनाज पैदा करने पर भी हजारों जानवरों की कत्ल कर वर्तमान में भी हमेशा खाया करते हैं। अपने भोग विलास के लिए, अरबों जीवों की सृष्टि का संहार करते हैं। अपनी पाशवी लीलाओं की तृप्ति के लिए, हमने उपर देखा वैसे लाखों हबसियों और अन्य प्रजाओं को गुलाम के रूप में पकड़ उन्हें हैरान–परेशान कर, तडपा–तडपाकर क्रूरता के साथ खत्म किए हैं। अमरिका के मूल निवासियों को और आस्ट्रेलिया-न्यूजिलैन्ड के मूल निवासियों का तो जानवरों की–हिरनों की तरह मृगया कर, खात्मा कर दिया है। आज अपार संपत्ति के स्वामी होने पर भी समस्त विश्व की संपत्ति हड़प कर लेने के लिए, अणुबम और लासर किरन जैसे विघातक–संहारक शस्त्रों द्वारा, केवल मानव जाति का ही नहीं, अपितु दुनियाभर की तमाम प्रकार की जीवसृष्टि का निकंदन निकालने के लिए उतार हो गए हैं। तो फिर अधिक बर्बर किसे कहा जाय ? उन के पुरोगामी या ये गोरे आततायी ? फिर भी, आश्चर्य की बात यह है कि हम उन्हें संस्कृत, प्रगतिशील उदार-मतवादी और मानव जाति के बंधु के रूप में मानते चले आ रहे हैं !

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

□ पूंजीवाद द्वारा मचाया गया होहल्ला !

गांधीजी ने जब इस स्थिति के प्रति अंगुलि-निर्देश किया और हमारे पूर्वजों की राह पर वापस लौट कर सादा, संयमपूर्ण जीवनयापन करने, मोक्षलक्षी विचारधारा स्वीकारने और शोषणखोरी का नाश करने के लिए, भारतीय अर्थव्यवस्था को पुनः स्थापित कर, भारत का सही अर्थ में भारतीयकरण करने के लिए आह्वान दिया, तब जिन के शोषण कार्यों के सामने अंतराय-विक्षेप पैदा हुए थे ऐसे पूंजीवाद और मार्क्सवादने विरोध के नारे शुरू कर दिए कि— 'गांधी, राष्ट्र को बर्बरता की ओर धकेल रहा है !' क्या इसी कारण तो गांधीजी की हत्या की गई न होगी ?

गांधीवाद की राह पर चलनेवाले नेताओं को एक या दूसरे बहाने द्वारा बहिष्कृत कर दिए और पूंजीवाद एवं मार्क्सवाद के सहयोग पर राष्ट्र को विनाश की ओर तीसरे विश्वयुद्ध की दिशा में आगे धकेल दिया और आज गांधीवाद के विरुद्ध वे पूरी ताकत से प्रजा के बीच प्रचारयुद्ध और राजनीति के क्षेत्र में कुर्सी–लड़ाई कर रहे हैं।

□ शूद्र समाज का अति उपयोगी अंग था !

शूद्र केवल, हरिजन कौम न थी। शूद्र तीनों वर्णों के समान ही समाज के उपयोगी अंग बने हुए थे। उन्हें तमाम मानव–अधिकार प्राप्त थे। जीवनयापन के पूरे अधिकार मिल पाए थे। इतना ज़रूर था कि प्रत्येक वर्ण के कार्यक्षेत्र अलग अलग निश्चित किये गये थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैसे आधुनिक सेना में भूमिदल, वायुदल और नौकादल और उन तीनों को शस्त्रास्त्रों और वस्तुओं का स्टाक लगातार पूरा करनेवाला सहायक दल आदि के कार्यक्षेत्र अलग अलग होते हैं। कार्य निश्चित प्रकार के होते हैं, उसी प्रकार उनके अलग अलग नियम होते हैं, उसी तरह उनकी सफलता के पुरस्कार भी अलग होते हैं। उसी प्रकार शूद्र वर्ण मोक्षलक्षी संसारी जीवन का सहायक दल बना हुआ था। वे गुलाम न थे; लेकिन समान अधिकार प्राप्त कारीगर थे।

□ दोषारोपण सवर्णों पर !

लेकिन सत्ता पाने पर, अंग्रेजोंने हमारे सहायक दल जैसे हरिजन विभाग पर गोवध की नीति द्वारा आक्रमण कर उसे तहस-नहस कर डाला और उन्हे अफ्रिकन हबसी गुलामों की कक्षा की हालत में फ़ैंक कर प्रचार द्वारा उस अपराध की जिम्मेवारी सवर्णों पर थोप दी।

□ जमीनदारों पर जुल्मों की बौछारें बरसीं !

उतना ही नहीं, लेकिन समस्त प्रजा के उपर, जिस प्रकार का अत्याचार हबसी गुलामों पर किया गया था वैसे अत्याचारों का तहलका मचा दिया। भारी अकाल पड़ा हो, खेतों में अनाज का दाना भी पैदा न हुआ हो; फिर भी मोगलों द्वारा निश्चित की गई महसूल पद्धति में तीन-गुना प्रमाण, अपनी मनस्विता के आधार पर बढ़ा कर, उसे जमीनदारों के पाससे वसूल किया जाता था। कोई जमीनदार उसे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भरपाई न कर पाए तो, उसे हथकडी पहनाकर सरेबाजार पैदल चला कर पुलिसथाने पर ले जाकर, कंटीली लाठी से उसका मुँह पीटा जाता था और खत्म कर दिया जाता था। मुँह की कुटाई होने के कारण, किसका शब है, यह जाना नहीं जाता था। उपरान्त उन जमीनदारों की युवान रूपवती स्त्रियों को उठा कर अंग्रेज अधिकारियों के निवासों मे भेज दी जाती थीं। इन तमाम ऐतिहासिक प्रमाणभूत घटनाओं पर पर्दा डालकर हमारे बच्चों को अंग्रेजों द्वारा संपादित-लिखित इतिहास पढ़ाया जा रहा है कि— 'आर्य प्रजा के पूर्वज बर्बर थे'!!

☐ पश्चिमी अर्थव्यवस्था ही बर्बर अर्थव्यवस्था है!

हिंसा और शोषण पर आधारित पश्चिमी अर्थव्यवस्था स्वयं ही बर्बर अर्थव्यवस्था है। मानवता के, न्यायतंत्र के, संस्कृति के और धर्म के किसी भी सिद्धान्त पर वह एक क्षण के लिए टिक नहीं पाती। फिर भी, हमारे बच्चों को हम, उसी बर्बरता पूर्ण अर्थव्यवस्था की पढ़ाई कराते हैं; यह हमारे लिए कैसी खतरनाक कमनसीबी है!

पश्चिम की पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाने, करोडों प्रजाजनों को भूखों मार कर, अनाज के भाव ऊँचे बनाए रखने के लिए, लाखों टन अनाज जलाकर, लाखों को भूखमें तडपा कर बरबाद किए हैं तो मार्क्सवादी अर्थव्यवस्थाने अपनी मनगढंत सहकारी खेतीबारी का विरोध करने के अपराध में एक करोड़ रूसी नागरिकों एवं तीन करोड़ चीनी नागरिकों को क्रूरतापूर्वक गोलियों से खत्म कर दिये हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

☐ कौन प्रगतिशील ?

जीवसृष्टि को जिलाने की भावना से अपने निजी मुनाफ की बिना परवाह किये, भारत का किसान खेती करता है; जिसे अनपढ़, बर्बर और बुद्धिहीन समझा जाता है और दूसरी ओर करोडों भूखे लोगों की भूख की तड़पन बिना परवाह किए, केवल अपने निजी फायदे के आधार पर कृषिकार्य करता रहे, वैसे पश्चिमी किसान को शिक्षित, संस्कृत और प्रगतिशील माना जाय !

हमारे शासकों को अभी गांधीवाद स्वीकार्य नहीं है। इसीलिए गांधीजी को गोली दाग दी गई। उनके गाढ़ अंतेवासियों का बहिष्कार कर दिया। उनका गौरवभंग किया गया है और देश पर पूंजीवाद और मार्क्सवाद का सहयोगी प्रभुत्व जमा दिया है। परिणाम स्वरूप, देश बर्बरता में जा फँसा है या ज़्यादा संस्कृत, ज़्यादा प्रगतिशील, समृद्ध और सुखी हुआ है; इसका निर्णय, जो अपनों को बुद्धिजीवी शिक्षाविद, साहित्यस्वामी या समाजसेवक समझते है, उन्हें करना होगा। सामान्य प्रजा तो समझती है कि, वह बर्बरता-का शिकार बनती जा रही है।

☐ शहरों की फूटपाथों पर मानव–कंगालियत कहाँ से उतर आती है ?

लोगों की कैसी दयनीय हालत की है, इस बर्बर अर्थ-व्यवस्थाने ? समस्त प्रजा की मोक्षलक्षी भावना का नाश कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उदरपूर्तिलक्षी भावना का प्रचार कर लोगों को पशुवत् ज़ीवन यापन के लिए मजबूर किए जा रहे हैं।

हबसी गुलाम अधिकतम संख्या में यूरप-अमरिका के बाजारों में घसीटे जा रहे थे। उन्हें यकायक, हमला कर पकड़ लिये जाते और शृंखलाओं से बाँधकर घसीट कर ले जाए जाते थे।

उसी प्रकार आज लाखों ग्रामवासियों को उनके पर यकायक आर्थिक आक्रमण कर उनके गले में बेकारी और भूखमरे का फ़ँदा डाल कर लाख-लाख की तादाद में शहरों की फूटपाथों पर मानव दरिद्रों-कंगालों के रूप में घसीट लाए जाते हैं।

इन फूटपाथों पर आने के बाद, जिन्हें आधुनिक, विकासशील, प्रगतिशील शहर माने जाते हैं, वहाँ उनकी क्या हालत होती है, उससे कितने लोग परिचित होंगे ?

लाखों क़ी तादाद में, शायद शहर की मूल जनसंख्या की अपेक्षा चार-पाँच गुनी ज्यादा संख्या में, ये निराधार ग्रामवासी, अधखूली कंगाल झोंपडपट्टियों में मानव दारिद्रय के रूप में ढेरों बंद आ बसते हैं !

किसी भी प्रक़ार की बिना सुविधा की जिस खुल्ली जगह पर वे बसे पड़ें हैं, उस जमीन के मालिक़ को उन्हें मन चाहा किराया देना पड़ता है।

उन्हें पानी, दिया या संडास की कोई भी सुविधा नहीं मिलती।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्त्रियों को अपनी लज्जा-मर्यादा छोड़ कर खुले में सार्वजनिक रास्तों पर मलमूत्र त्याग करना पड़ता है । रेल की पटरियों के आसपास फैली झोंपडपट्टी के निवासी रेल की पटरी के पास संडास करने बैठते हैं; फलस्वरूप प्रतिदिन दो-तीन आदमी रेल के नीचे कटे जाते हैं ।

झोंपडपट्टी में गुण्डे लोग भी बसते हैं। वे उन्हें परेशान करते रहते हैं । उनकी स्त्रियों को अपमानित करते हैं और उनके बच्चों को अपनी समाजविरोधी प्रवृत्तियों के लिए काम में लगाते हैं। बड़ी मुसीबत से कहीं छोटी सी तनख्वाह की नौकरी मिल जाती है तो परिवार का आदमी आठ घंटों नौकरी करता है । तीन घंटे रेल या बस की मुसाफिरी में बिताता है । रेलों की इस यात्रा में आठ घंटों की नौकरी की अपेक्षा अधिक परिश्रम पहुँचता है और उनकी शक्ति का ह्रास होता है। ग्यारह घंटों की कड़ी मजदूरी के बाद, पुरुष जब घर वापस लौट आता है तो वह क्या पाता है? झोंपडपट्टी के आसपास फैली दुर्गंध, मच्छरों के झुंड, उदास पत्नी, रोते-बिलखते बीमार बच्चें और राशन में केरोसीन मिल न पाया हो अथवा उसके खरीदने के पैसे पास में न होने के कारण फरजियात उपवास करना पडेगा। उसकी जानकारी और अपनी नजरों के सामने घूल में लोटते बच्चों की तंदुरस्ती की, शिक्षा की और उनके पालन-पोषण की गहरी चिन्ता !

जब कि ऐसी पद्धति के जीवन को जंगालियत के रूप में समझनेवाले पूंजीवादी, लखपति में से करोडपति बनने के,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अेम्बेसेडर गाडी मेंसे विदेशी कार खरीदने के, बीस मजले के मकानों में अद्यतन फर्निचर और साघन-सुविधाएँ बसाने के और राजनीतिज्ञों को अपने वश में बनाए रखने के एवं विदेशों में जाकर भोगविलास–मौजमजाह करने के अरमान संझोये रहते हैं। तब ये बिचारे लाखो झोंपड़पट्टी के निवासियों के जीवन में अंधकार छाया रहता है। जीवन के उस घोर अंधकार के प्रतीक रूप में उनकी झोंपड़पट्टी में भी अंधेरा छाया रहता है।

□ यह इच्छा पूर्ण होगी ?

वे तो प्रभु से एक ही पार्थना करते हैं कि हे भगवान ! हमें रहेने के लिए अच्छी जगह, पानी, दियाबत्ती और पाखाने की सुविधाएँ कब प्राप्त होगी ? उन्हें तो क्या, उनकी पाँचवीं पीढ़ी को भी ये सुविधाएँ प्राप्त होगी या नहीं यह शंकास्पद है। यदि देश का सुकान चार पुरुषार्थ की मोक्षलक्षी संस्कृति की ओर न झूकने पाए तो, संभव है कि आज डबल रूम और सिंगल रूममें बसनेवाले मनुष्योंमें से पचास प्रतिशत संख्या, निकट भविष्य में झोंपड़पट्टियों में बसने मजबूर होगी।

□ हबसी गुलामों जैसी हालत !

हबसी गुलामों की अपेक्षा, इन लोगों की स्थिति किस प्रकार बेहतर हे ? उन गुलामों के शरीरों पर कोडे बरसाए जाते थे। इन लाखों झोपडपट्टियों के निवासियों को कोड़ों की मारके बदले, उनके जीवन की तमाम आशाओं को चूर कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दी गई है। वे अपने बच्चों को पढ़ा नहीं सकते। पूरा भोजन दे नहीं सकते। उचित कपड़े पहना नहीं पाते। उनका गृहस्थजीवन, अंधक़ार में विलीन हो गया है। वे अपनी पत्नी के। एकाध साडी की भेंट कर सकने की हालतमें नहीं। शायद दे भी पाए ते।, उसे सुरक्षित रखने की उनकी झोंपडपट्टी में कोई जगह नहीं।

गाड़ी मेंसे या हल से छूटे बैल की कोढ, इस झोंपड-पट्टी की अपेक्षा अच्छी होती है। उस बैल का मालिक, उसे अच्छी तरह पहचानता है। उसे पूरा खिलाता है। प्रेमसे शरीर पर हाथ फेर सहलाता है। लेकिन झोंपडपट्टी के यह निवासी, जिस की आठ घंटों तक नौकरी करता है, वह न उसे पहचानता है, न कभी उसके समाचार पूछ पाता है। वह क्या खाता है, उसकी न उसे परवाह है! क़ैसे जीवन गुजारता है! उसके समग्र जीवन में अंधकार के सिवा, और कुछ नहीं होता। केवल पानी, बत्ती, और पाखाने की सुविधा मिल पाए ते। वह अपने को भाग्यशाली समझने तैयार है।

लेकिन ये प्राथमिक सुविधाएँ भी उसके नसीब में बदी नहीं हैं। पूंजीवादी और मार्क्सवादी सहयोग के मिश्र अर्थ-तंत्र प्रेरित ये मानव कंगालों के ढेर जैसे जैसे बढ़ते जायेंगे, वैसे उनकी अवदशा, उन हबसी गुलामों से भी बदतर होकर रहेगी!

□ धृष्टता की पराकाष्ठा!

समस्त राष्ट्र को जंगालियत की स्थिति में फैंकनेवाली

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ऐसी है, पूंजीवादी–साम्यवादी अर्थव्यवस्था ! फिर भी, वे प्राचीन परंपरागत व्यवस्था को, जंगालियत की हालत में ले जानेवाली अर्थव्यवस्था के रूप में उसका विरोधी प्रचार करते है, जो उनकी धृष्ठता की पराकाष्ठा है !

□ □ □

□ **भारतीय विद्यार्थी, भारत की अपेक्षा विदेशों के बारे मे अधिक जानकार है !**

□ **ओ विदेशी जन ! देशी अंग्रेजों ने हस्तगत, आपको इस देश की प्रजा का अब कितना शोषण करना है ! अब तो शान्त हो !**

□ **अरे युवाजन ! प्रजा के गौरवशाली इतिहास के साथ सम्बन्ध जोडे !**

□ □ □

□ **नई पीढ़ी का कर्तव्य क्या है ? केवल विदेशी नकलबाजी !**

हमारी अगली पीढ़ी हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू विद्याकला के लिए गौरव मनाती थी ! उन तमाम विषयों के साथ, नई पीढ़ी अपना संपर्क गँवा बैठी है । विदेशीयों के षड्यंत्रोंने, हिन्दुओं की नई पीढी और उनके पूर्वजों के बीच के इतिहास के स्रोतों को सुखा दिया है । अब वर्तमान प्रजा को, हिन्दु संस्कृति, धर्म, साहित्य, विद्या, कला आदि के बारे में कुछ करना आवश्यक महसूस ही नहीं होता ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आवश्यक मालूम होता है केवल विदेशी साहित्य, संस्कृति और जीवन प्रणालिका की अंधाधूध नकलें और उन्हें सीखने के लिए, अलग अलग बहाने दिखाकर विदेशों के प्रवास करने में गौरव मनाना !

बेचारी भावि पीढ़ी ! उसे तो यही मालूम होगा कि हमारे पास विद्या, कला, ज्ञान, व्यापार–वाणिज्य करने की सूझबूझ, समृद्ध इतिहास या भव्य संस्कृति आदि कुछ था ही नहीं। हम पुरानी पीढ़ी के लोगों के पास से जो सुन पाते हैं, वह केवल भाटचारण पुत्रों द्वारा। कहीं मनगढंत बातें ही हैं। अंग्रेजोंने ही हमें सभ्य और शिक्षित बनायें, ज्ञान दिया और सुगठित प्रजा के रूप में एकत्र किए।

ऐसी मान्यताओंने प्रजा की स्वतंत्र विचार करने की शक्ति को खत्म कर दी है। मौलिक सूझबूझ को कुंठित कर रखी है। जीवन की प्रत्येक समस्या को पश्चिम की द्रष्टि से, उसी ढंग से हल करने में और पश्चिमीय दुनिया की नकल-बाजी करने में गौरवान्वित बना दिये हैं !

☐ कैसी बदनसीबी !

दुनियाभर में भारत, सबसे बड़ा कृषिप्रधान देश है और दुनियाभर में भारत ही एक ऐसा देश है कि जो कृषि के लिए खाद और हर प्रकार की खाद्य चीजों, जैसे कि अनाज, दूध, घी, तैल, मक्खन आदि को बडे बडे औद्योगिक देशों मेंसे प्राप्त कर, विदेशियों के वितरण के स्तर की नकल, प्रजा के सामने रखने के प्रयासों के लिए गौरव महसूस करता है !

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दुनिया में भारत ही ऐसा देश है, जिस की शिक्षा का ढाँचा, विदेशियोंने गढ़ रखा है । और विद्यापीठ की किताबें भी विदेशियोंने तैयार कर दी हैं और दुनिया में भारत ही एक ऐसा देश है, जिसके राजनैतिक, धार्मिक, व्यापारी या शैक्षिक अगुए, स्वयं को जो कहना है, उसे अपनी मातृभाषा द्वारा या भारत की अन्य किसी भाषा द्वारा व्यक्त करने के बजाय, अंग्रेजी भाषा में अच्छी तरह व्यक्त कर सकते हैं और उसमें गौरव महसूस करते हैं ।

☐ शिक्षा भी विदेशी भाषा के माध्यम से !

भारत ही एक ऐसा देश है कि जहाँ अपने बच्चों को मातृभाषा द्वारा शिक्षा देने के बजाय, माँबाप अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम द्वारा शिक्षा देने का अधिकाधिक पसंद करते जा रहे हैं और अंग्रेजी माध्यम की शालाएँ शुरू करने में ऐवं उस प्रकार की शिक्षा देने के पीछे प्रति वर्ष करोडों रुपयों का व्यय करते हैं।

इस भारी व्यय का सदुपयोग, वे मातृभाषा के साहित्य के विकास के लिए, धर्मग्रंथों की समाप्त हुई आवृत्तियों के पुनर्मुद्रण के लिऐ, हमारे प्राचीन ज्ञास्त्रों की लाखों नकलों-हस्तप्रतों, हजारों वर्षों से अनुपयोग के कारण पड़ी रहने से, नष्ट होनेसे बचा कर नए ढंगसे प्रकाशित कराने के लिए, पानी के अभाव को दूर करने के लिए, अपोषण से पीडित करोडों बच्चों को मुफ्त दूध पिलाने के लिए, उन्हें भावि अन्धत्व या मानसिक रोगों के शिकार होने से बचाने के लिए

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

या फ़ूटपाथों पर खुले आसमान के नीचे नित्यप्रति बढ़नेवाले गाँवों के भगेडु मानवकंगालों के निवास तैयार करने में नहीं कर सकते ?

☐ अनुवाद भी विदेशी !

भारत ही एक ऐसा देश है कि जो अपने धर्म-ग्रंथो के अधिकतर अनुवाद कराने की अपेक्षा, ज़ब विदेशी लोग, भारत विरुद्ध उनके षड्यंत्रों के संदर्भ में अपनी अपनी भाषाओं में हमारे धर्मग्रंथों का अनुवाद करते हैं, तब गौरव महसूस करते हैं।

संभव है कि अनुवादों में हमारी संस्कृति के प्राणतत्त्वों का हनन कर दिया गया हो, और हमारी भावि पीढी उन ग्रंथो का अभ्यास अपने आचार्यों के पास करने के बजाय, विदेशियों के पास विदेश जाकर करने लगे, और फलतः हमारे जीवन के ढाँचेको ही समुचा उलटपुलट कर दे ।

☐ इतिहास भी विदेशी द्वारा लिखित !

भारत की प्रजा एकमात्र ऐसी प्रजा है जो स्वाधीनता प्राप्ति के २०-३० सालों बाद भी, अपने बच्चों को विदेशियों द्वारा बुरे हेतु से लिखा हुआ भारतीय इतिहास पढ़ा रही है।

भारत में जैसे, विदेशियों की रहस्यमय चालबाजीसे, मानव, जमीन, गाय और अनाज के बीचका संबंध टूट गया, बरसात का पानी, जमीन के गर्भके ज़लभण्डार, और भूगर्भ के जल-भण्डारों का संबंध कट गया। जमीन, जलसंपत्ति, वनसंपत्ति, पशुसंपत्ति और मानवों के अन्योन्य संबंध भी कट गए, वैसे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भारत की भावि पीढी का हिन्दू धर्म, संस्कृति, साहित्य, भाषा, रीतरिवाज और इतिहास विषयक संबंध भी टूट चूके हैं।

जैसे भूकंप हो और जमीन के दो टूक एक–दूसरेसे मीलों तक दूर हट जाए, वैसे भावि पीढी के और हमारे भूतकाल के सारे संबंध कट चूके हैं।

अतः उसे जीवनयापन करने के लिए, जीवन के प्रश्नों का मुकाबला करने के लिए, विदेशी विद्या, विदेशी संस्कृति, विदेशी इतिहास, विदेशी साहित्य का सहारा लेने के लिए व्यर्थ प्रयत्न करने पड रहे हैं।

☐ भारतीय छात्रों का भारतविषयक अज्ञान !

भारतीय छात्र नेपोलियन बोनापार्ट से अच्छी तरह परिचित हैं; लेकिन नेपोलियनसे बढे चढे महान भारतीय सेनापति महादजीं सिंधियासे बिल्कुल अनजान हैं।

वह मुहम्मद गजनी और मुहम्मद घोरीसे परिचित है। लेकिन उनके समकालीन क्षत्रिय राजा, कि जिन्होंने इन के सैन्यों की घोर पराजय की थी, उनसे अपरिचित रहे हैं।

फ्रेंच विप्लव की पूरी जानकारी उनके पास है और रुसो क्रान्ति के 'मोस्को दिन' को बड़े गौरव के साथ वे मनाते हैं; लेकिन समस्त भारत में व्याप्त घोर हिंसा की आसुरी भावना का विनाश कर, जिन्होंने धर्म का बोलबाला पुनः जारी किया, और समुचे राष्ट्र में अभूतपूर्व अहिंसक क्रान्ति की, ऐसे अनेक महापुरुषों के बारे में लेशमात्र जानकारी नहीं है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यूरप में सदी-सदी पर जो परिवर्तन होते रहे, उसके बारे में कई पन्नों में अनूठे लेख लिख सकते हैं, लेकिन भारत में जिन्होंने सांस्कृतिक क्रान्तियाँ मचा दीं, आसुरी, भौतिक, विलासलक्षी प्रवृत्तियाँ पर रोकथाम लगाकर, लोगों को पुनः धर्म की ओर, संस्कृति की ओर, सदाचार की ओर मोड लिये, उनके बारे में कौन क्या जानता है ?

भारत के गाँव गाँव मे अपरिग्रही जैन साधु पदयात्रा करते करते, संस्कृति का, अहिंसा का, धर्म का संदेश लेकर, हजारों को तादाद में बारह मास घूमते फिरते हैं, उनके पास जाकर उनसे कुछ समझने का-पाने का मनोभाव किसी के दिल में कभी पैदा हुआ है ?

भारत का विद्यार्थी, इंग्लैण्ड के May-fair के बारे में जानकारी रखता है; लेकिन उडिसा के हजारों जहाजों का बेड़ा, अग्नि एशियाई देशों तक घूमता रहा और हिन्दू संस्कृति का प्रचार-प्रसार करता रहता, उसके बारे में वह कोरा अनबूझ होगा ।

उसे फ्राँसीस ड्रेइक और नेल्सन के पराक्रमों का पता है । वह स्पेनीश अरमादा और ट्रफालगर के नौकायुद्ध के बारे में पूरा ज्ञान रखता है; लेकिन गुजरात के नौका-दलने पुर्तगीज नौकासैन्य को कैसे तितरबितर कर दिया, वह नहीं जानता । तो फिर जूनागढ-सोरठ एक रोज महान समुद्री सत्ता थी । उसका जहाजी बेड़ा, वर्तमान अमरिकी सातवे नौका बेडे की तरह समर्थ था और वह जब समुद्री यात्रा में उतर आता तब ईजिप्त से सिलोन तक के समुद्र विस्तार में समुद्री लुटेरों में भगदड़ मच जाती थी । यह बात

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उनसे कही जाय तो वे मानते भी कैसे ? लेकिन ये सारी इतिहासप्रसिद्ध यशोगाथाएँ हैं, जिन के साथ हमारा संबंध कट चूका है ।

उस पुराने इतिहास को भूल जाए तो भी अभी दो सौ साल पहले ही जूनागढ़ और पोरबंदर के बीच नौकायुद्ध खेला गया था, उसे कोई पोरवंदर या जूनागढ का निवासी जानता होगा ? ऐसे भव्य नौकायुद्ध के योद्धाओं के वंशजों का स्थान वर्तमान भारतीय नौकासैन्य में कैसा है ? गत वर्ष केवल आठ गुजराती युवकों को नौकासैन्य में प्रवेश मिल पाया है । व्यापारी जहाजी बेडोंमें से वे बिलकुल नामशेष हो गए हैं ।

अभी ३५ साल पहले ही, पोरबंदर के बंदरगाह में ६५० ज़हाज थे और ६–७ हजार नाविक सातों समुद्रों को पार किया करते थे, उतना ही नहीं, दूसरे विश्वयुद्ध में भी इन तमाम जहाज़ों ने अफ्रिका के मित्रराज्यों के लाखों के बने सैन्य को तमाम सामग्री रातदिन पहुँचाने की जिम्मेवारी अदा की थी। इस तरोताजे इतिहास से उस प्रदेश के विद्यार्थी परिचित है क्या ? उनके देखते ही देखते वे ६५० जहाज अद्रश्य हो गए और केवल छ ही बचे रहें, ऐसा क्यों हुआ उसका इन लोगों को पता है क्या ?

□ संपर्क टूट चूका है !

हमारे इतिहास का और हमारे पूर्वजों की विचारश्रेणी का और संस्कृति का प्रवाह सूख चूका है और हमारे ऋषिमुनि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

द्वारा सर्जित मानव-संस्कृति का संपर्क-सम्बन्ध हम गँवा बैठे हैं।

हमारे पूर्वजों द्वारा बिरासत में मिली वह अमूल्य संपत्ति थी। उसे गँवा कर, करैंसी नोटों के बंडलो को और वेदेशी लोगों द्वारा रहस्यमय ढंगसे किए गए कर्ज को पूँजी मानने लगे हैं।

हमारे पूर्वजों के ज्ञान और विचारसाहित्य से विच्छिन्न होकर, विदेशी सूत्रों–नारों के आधार पर उनके सहारे जीवनयापन के व्यर्थ प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन प्रचारित इन सूत्रों में सत्यांश है या हमें खत्म करने के ये रहस्यमय शस्त्रास्त्र हैं उसके बारे में सोचने की हममें सूझ ही नहीं रही।

☐ किस के लिए नदियों पर बांध बनाए जाएँ ?

उदाहरणार्थ, आज प्रत्येक भारतवासी एक ही आवाज में नारा लगाता है कि, 'हम नदियों पर बाँध नहीं बाँधते, इसी कारण नदियों का सारा पानी समुद्र में बह जाता है और हमें पीने का पानी तक नहीं मिलता।' लेकिन भला नदियों पर बाँध बाँधे, उससे तो विदेशियों को और पश्चिम की हिंसा और शोषण पर आधारित अर्थव्यवस्था के समर्थक स्टील, सिमेन्ट और स्थापत्य–उद्योगों के मालिकों को ही पारावार लाभ है।

नदियों के पानी को समुद्र में बह जाने में रोकथाम करोगे तो, परिणाम स्वरूप समुद्र का पानी ज्यादा क्षारयुक्त और घना हो जाएगा। समुद्री लाखों जीव–जन्तुओं का सर्व-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नाश होगा और नौका-व्यवहार ठप हो जाएगा और समय गुजरने पर, बरसात ही दुर्लभ हो पाएगा ।

उपरान्त; जहाँ जहाँ नदियों पर बाँध बाँधने के नाम, बड़े बड़े जलबाँध बनाए गए हैं, उन प्रदेशों में सूखा का बढ़ावा हो गया है और पीने के पानी के अभाव खटकने लगे हैं ।

लेकिन हमने जो किया, उसके परिणाम क्या आ पाए हैं ? उसे सोचने–समझने की शक्ति ही हम खो बैठे हैं और स्थापित हितों द्वारा प्रचारित मृगजल के पीछे दौड़भाग करते मारे मारे फिरते रहना है, वहाँ किया क्या जाएँ ?

☐ आत्मघात को ही निमंत्रण देना है ?

नदियों के पानी को समुद्र में जानेसे रोककर, भावि पीढ़ी के लिए आत्मघात करने का आमंत्रण दे, उसकी अपेक्षा बरसात का जो पानी जमीन पर बरसता है उसे समुद्र में बह जाने से रोककर, सूखे हुए भूगर्भ के जलभण्डारों को और उसे प्रवाहित कर, बरसात, जमीन उपर के जलाशय, और भूगर्भ जलाशयों के बीच, टूटे सबंध को पुनः स्थापित करने में ही ज्यादा सयानापन, कम परिश्रम और कम खर्च होता है । यदि ऐसा किया जाय तो बिना खर्च तमाम स्थानों में खेती के लिए और पीने के लिए पानी की पूरी सुलभता हो पाएगी और पानी की भाग बटाई के बारेमें होनेवाले प्रादेशिक झगडों की जड भी मिट जाएगी ।

लेकिन ऐसा सोचविचार करना भूलकर उन रहस्यमा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सूत्रों–नारें के–नदियों को बाँधो और नदियें के पानी को समुद्र में बह जाने से रोको' के नशे में हम जी रहे हैं।

□ मलेरिया–नाबूदी या पानी–नाबूदी ?

१६ वीं सदी के अन्त समय तक भारत की लगभग तमाम नदियाँ बारह मास नियमित बहती रहती थी। उनके किनारे १५ से ५० फूट तक ऊँचे थे, जिनमें पर्याप्त पानी का समावेश होता था। प्रायः प्रत्येक गाँव के लिए बड़े बड़े तालाब पानी से भरेपूरे रहते थे और बाहर माह बहती नदियें और तालाबें का पानी, जमीन के नीचे झमकर भूगर्भ-के जलभंडारें को भरेपूरे बनाए रखता था।

लेकिन हमारी संस्कृति को नष्ट करने के लिए और समृद्धि की लूट करने आए अंग्रेजोंने मलेरिया-नाबूदी के बहाने प्रायः सभी तालाबों को मिटा दिए और जंगलें की कटाई करवा कर, जमीन की धुलाई के द्वारा नदियें को मिट्टी से भर कर सूखने दीं और उस तरह भूगर्भ जलभंडारें का अटूट संग्रह को काट कर देश को जलहीन बना देने की ओर धकेल दिया और जलरहित बना देने के बाद पानी की विभिन्न योजनाओंमें, हमारे देश के करोडों रुपयों को विदेशें में घसीटे गए।

दुःखद घटना तो यह है कि इन तमाम योजनाओंने पानी की मुसीबत में ओर बढ़ावा किया है और उन योजनाओं के लिए करोडों टन सिमेन्ट, स्टील आदि का व्यय किया गया। जब कि उन दोनों चीजें की विदेशें में निर्यात कर, विदेशी मुद्रा प्राप्त कर पाते।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लेकिन भूतकाल के प्रवाहों से संबंध विच्छेद कर, विदेशियों के नारों पर मंजिल तय करनेवाले हमारे राजनीतिक नेताओं को इन सारी बातों को समझने में जरा भी दिलचस्पी नहीं है। उपरान्त, व्यापार–उद्योगों की शोषक अर्थव्यवस्था के ढाँचे में ऐसे जम गए हैं कि, उन्हें तो इन विघातक योजनाओं में ही दिलचस्पी है। प्रजा के हित की रक्षा करने की सूझ-बूझ, प्रायः राजनैतिक अग्रणियों और व्यापार क्षेत्र की व्यक्तियों के रहस्यमय फँदों में फँसे हैं; अतः प्रजा आज निराधारता और मजबूरी महसूस कर रही है।

☐ गांधी कहाँ है ?

हमारे राजपुरुषों की वाणी और आचार के बीच जरा भी समन्वय–मेल नहीं है।

यदि चुनाव में मतों की प्राप्ति के लिए, वे गांधीजी के नाम का दुरुपयोग करते हैं उसी चुनाव में पिछड़ी ज्ञातियों के मत प्राप्त करने के लिए, शराब खुलकर पिलाया जाता है।

सत्ता पर आने के बाद, गांधीमार्ग पर चलते रहने की बातें भी करते हैं; लेकिन तमाम कार्यक्रम, शोषक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए ही आयोजित किए जाते हैं।

वे युवकों को गाँवोंमें जाकर सेवा करने की झूठी सलाह दिया करते हैं; लेकिन उन्हें शिक्षा ऐसी देते है कि जिससे वे युवक, गाँवों के साथ समन्वय कर नहीं पाते। दूसरी ओर उनके द्वारा आयोजित आर्थिक कार्यक्रम, गाँवों में बसने-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वाले लोगों को अधिक संख्या में शहरों की फूटपाथों पर धकेल देने के लिए भजबूर बना देते है ।

□ खद्दर–ग्रामोद्योग की बुरी हालत ।

गांधीजी ने युवकों को गाँवों में जाने का अनुरोध हमेशा किया था । गाँवों और शहरों के लोगों के बीच का जीवन-प्रवाह खद्दर और ग्रामोद्योगों द्वारा ही जारी रह सकता है । अतः उन दोनों क्षेत्रों के विकास के लिए, देशकी जरूरतों के उद्योगों को खद्दर–ग्राम–उद्योगों के ढाँचेमें ढ़ाल देने के प्रयत्न किए; लेकिन उन दोनों क्षेत्रोंमें पश्चिमी चक्षुओं के और शोषक अर्थव्यवस्था के प्रतिनिधिरूप छिपे रुस्तमों से घिर गए। अतः खद्दर और ग्राम--उद्योग प्रगति कर नहीं पाए ।

उपरान्त, खद्दर और ग्रामउद्योगों की जड़ें तो गोरक्षा, वनरक्षा, भूरक्षा और जलरक्षा में ही रही हैं। लेकिन इन चारों क्षेत्रों को तो खत्म कर दिए गए है; जिससे खद्दर ग्राम-उद्योग और ग्राम और शहरी आबादी के बीच जो सांस्कृतिक और आर्थिक सम्बन्ध का प्रवाह जारी रहना चाहिए, उसके विरूद्ध उसके स्रोत भी सूख गए और खद्दर और ग्राम--उद्योगों की शोषक अर्थव्यवस्था के ढाँचे में ऐसे जोड दिए हैं; जैसे बैलगाड़ी के पहियों को ऐरोप्लेन के नीचे बांध दिए गए हों।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

☐ युवक गाँवोंमें जाएँगे ? लेकिन कब ?

अब शहर के बेकार युवक गाँवों में तो जाएँगे ही उस में कोई शंका नहीं; लेकिन जानते हैं ? कब ?

जब शहरों के रास्तों पर बेकारों के समूहों को खड़े रहने के लिए जगह भी न मिल पाएगी, जब बडे उद्योगों में मजदूरों की भर्ती करने का अवकाश न होगा, लेकिन मजदूरों के आवेदनपत्रों के स्वीकार करने की भी परवाह न होगी, तब विदेशी लोग हमारे बेकारों को गाँवों में भेजने के लिए लोनें देंगे। हमें माँगने का अवसर ही न आ पाएगा, वे खुद ही आकर देने के लिए उतार होंगे। जैसे टयूबवेलों की परियोजनाओं के लिए, स्वयं आकर साडे दस अरब रूपये देने की इच्छा व्यक्त की थी।

उन लोनों का (सहायके रूप में) सरकार शहरी बेकारों को गाँवों में भेजेगी। अब गाँवों में सुरक्षित थोडी-सी मानव-संस्कृति को–आर्यभावना को खत्म करने, विदेशी साहित्य, विदेशी विचारधारा और विदेशी रहन-सहन का प्रचार करने के लिए, अद्यतन तकनीकी का लाभ गाँवों को देने के बहाने दिखाकर ही तो !

☐ अरे विदेशी लोग, इस प्रजा का अब कितना शोषण करना है !?

कैसी युक्ति–प्रयुक्तियों से इन विदेशियों ने प्रजा के प्रत्येक स्तर में सहायता के नाम अपना प्रभुत्व जमा दिया है ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पहले उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं के लिए, लोनें दीं और सहायता के नाम उधार अनाज देकर कर्ज और उसके सूद का भारी बोझ डाला ।

बाद में खानगी क्षेत्रों को लोनें दीं और उद्योगों का विकास कर देने के बहाने, भारत के उद्योगपतियों के साथ सहयोग में बडे बड़े कारखानों का निर्माण कर शोषण करने का जारी रखा । बाद में जाहिर क्षेत्रों के लिए भी, नई अरबों रुपयों की लोनें दीं । आगे चल कर राज्य सरकारों को भी भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में सहायता के लिए लोनें देने का शुरू किया । यह अवश्य था कि इस सहायता के नाम दी जाने-वाली लोनों के साथ कड़ी शर्तें तो जुड़ी ही रहती हैं ।

उसके बाद उन्होंने नगर निगमों को दूध–योजना के लिए, जल योजना के लिए, गटर योजना के लिए, सहायता करने के निमित्त लोनें देने की तत्परता दिखाई ।

अब गाँवों में शालाओं के निर्माण के लिए शालाओं के पाठयपुस्तकों तैयार करने और आखिर में मूत्रालय–शौचालयों के निर्माण के लिय जिला पंचायतों तक लोनों का यह ज़हर, सहायता के रूपहले नाम की ओट में फैल जाय तो, कोई आश्चर्य न होगा ।

क्यों कि प्रजा के दिल में ऐसे विषैले बीज़ बोये जा चूके हैं कि विदेशी सहायता और विदेशी तकनीकी के बिना स्वीकार किए, विकास का संभव ही नहीं और विकास यानी

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

विदेशी 'ऊँचे जीवन स्तर को अपनाना और उसी ढंग से सोचना-विचारना, बस यही !'

☐ वह भविष्यवाणी सचमुच सत्य सिद्ध होगी ?

हमारे इतिहास के साथ, हमारा संबंध विच्छेद यदि न हुआ होता तो, इस विकास की मायाजाल में कभी न फँस पाते। लेकिन अंग्रेजों की व्यूहरचना बड़ी चालाकीपूर्ण थी और बुद्धिपूर्वक की गई थी। गोवध द्वारा अपोषण पैदा कर मन, बुद्धि और शरीर, तीनों को एक साथ कमजोर बना दिए।

१९६८-'६९ में लोकसभा में किसीने चेतावनी दी थी कि- 'किसी वैज्ञानिक का ऐसा मानना है कि देश में बच्चों को पूरा-उचित पोषण प्राप्त न होने से २० साल में देश अंधजनों और पागलों से भरा पूरा हो जाएगा !'

☐ नेत्ररोग के दर्दियों में बढावा क्यों ?

बच्चों का मानसिक विकास तीन साल तक होता है। उन तीन वर्षों में बच्चों को ताजा, शुद्ध गाय का दूध मिलता रहे तो, उनके दिमाग की पूरी वृद्धि होती है। बुद्धिप्रतिभा सात्त्विक बनती है। पोषण जितना कम मिले, उतना मानसिक विकास कम होगा ही।

इन वर्षों में गाय के दूध द्वारा प्राप्त पोषण द्रष्टि को भी स्वच्छ बनाता है। यहाँ द्रष्टि से मतलब है, आन्तर-बाह्य द्रष्टि।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अंग्रेजोंने अनगिनत संख्या में गायों की कत्ल कर प्रजा के पोषणस्रोत को सूखा दिया। परिणाम स्वरूप देश में नेत्ररोगी और अंधजनों के प्रमाण में यकायक बढावा हो गया। आँख के रोग बढ़ने लगे। आँखें कमजोर होती चलीं। फिर तो दवाई विक्रेता और ऐनक-विक्रेता मालामाल हो गए।

पोषण कम हुआ। परिणाम प्रजा क्षीणबुद्धि होने लगी। उसने अपने भूतकालीन भव्य संस्कार, साहित्य, इतिहास आदि के साथ अपना संबंध विच्छेद कर विदेशियों के चरणों में अपनी बुद्धि का समर्पण कर दिया। उन्हें पागल ही समझे जाएँ। ऐसे पागलों से और आन्तर-बाह्य सूझ गँवाए चक्षुहीनों से सारा राष्ट्र भरा पूरा होता चला।

इसी लिए जब हम ज़ार या फ्रेंच सम्राटों के दूषित इतिहास को पढ़ते हैं और वहाँ की हिंसक क्रांतियो का स्तुति-गान करते हैं; लेकिन हमारे यहाँ जो अहिंसक सांस्कृतिक क्रान्तियाँ हो पाई हैं, उनके बारे में कुछ भी जानते नहीं। हमारे राजा लोग अंग्रेजों की सहायता के करारों से कैसे धोखे खा गए, उसे भी जानने की परवाह नहीं करते। शायद कभी गलती से पुराने इतिहास की पुस्तक में कहीं पढ़ भी लिया हो तो भी उस मेंसे बोध ग्रहण करने की क्षमता हमारे वर्तमान राजपुरुषों में रह नहीं पाई।

□ सहायता के करार द्वारा किए घोर अत्याचार !

अंग्रेज़ोंने हमारे भिन्न भिन्न राजाओं के साथ सहायता के करार किये थे। उन करारों के आधार पर उनकी रियासतोंमें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उनके ही खर्च पर अपनी सेनाएँ नियुक्त की गई थी। साथमें शर्त ऐसी जोड़ दी गई थी कि उन सेनाओं का उपयोग अंग्रेज शासन की बिना मंजूरी, कोई भी रियासत कर नहीं सकती।

दूसरी शर्त यह रखी गई कि रियासतें अपनी सेनाओं की सैनिकसंख्या में कटौती कर दे; क्योंकि देशमें शान्ति और सुरक्षा की भावना स्थापित करनी थी।

इस प्रकार रियासतों में अंग्रेज सेनाएँ रहीं, देश की सेनाएँ बिखेर दी गई। इसका दुष्परिणाम क्षत्रिय कौम को भुगतना पड़ा। सैन्य में से नौकरी गँवाकर, केवल जमीन पर ही गुजारा करने की नौबत आई। वहाँ भी उन्हें दूसरा भारी धक्का झेलना पड़ा। गोवध की नीति ने बैलों और खादोंको महँगे और दुर्लभ बना रखे। क्षत्रिय कौम ग़रीबी के चक्कर में फँस गई। गोवध की नीतिने हरिजन कौम को (शूद्र जाति) तोड दी। गोवध और सहायता के करारो ने क्षत्रियों को बरबाद कर दिये। विराट पुरुषके हाथ और पाँव दोनों- सहायता के जालमें फँसे और गोवध के हथोडे के प्रहारों से चूर–चूर हो गए।

फिर भी सहायता-करार के साथ तीसरी शर्त भी जोडी गई।

राजकुमारों को आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए राजालोग या तो इंग्लेण्ड में भेजे दिए जाय अथवा उनके लिए ही खास निर्मित कुमार कालिजों में भर्ती कराऐ जाएँ जहाँ अंग्रेज अध्यापक उन्हें भोगविलास, शराब, जुआ के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

व्यसनों में लपेटकर, उनके भावि जीवन को बरबाद कर सके ।

इस प्रकार सहायता की सुनहली जालमें समस्त क्षत्रिय कौम और राजालोग फँस गए और इतिहास में लीन हो गए--भुला दिये गए ।

□ कारीगरों को भी न छोडे !

ऐसी ही सहायता की जाल बिछाई गई हमारे व्यापारी वर्ग और गाँवों के कारीगर वर्ग पर । वस्त्र–उद्योग हमारा मुख्य राष्ट्रीय उद्योग था। यूरप के बाज़ारों में हमारा कपड़ा उनके देशके अपने ही कपडों की तुलना में ५० से ६० प्रतिशत कम मूल्य में बेचा जा सकता था । यूरपी राज्योंने हमारे कपडों पर आयात–कर लगाए; फिर भी उनके कपड़े हमारे कपडे की कम किमत और उच्च गुणवत्ता के आगे टिक नहीं पाते थे । तब अंग्रेजोंने सहायता की जाल बिछाई।

हमारे बुनकरों के साथ, अमुक निश्चित स्टाक में कपडे लेने के करार किए और उसकी कुल रकम का अमुक भाग, उन्हें सहायता के रूप में पेशगी रूपमें देकर, उनका माल अंग्रेज व्यापारियों को देनेसे पहले, अन्य देशके फ्रैंचों, वलंदों, पुर्तगीज़ों आदि व्यापारियों को दिया न जाय, ऐसी शर्तें मंजूर करवा दीं ।

और बादमें तुरंत ही माल की माँगें पेश करने लगे। तकाजा करने लगे । वे रातदिन मेहनत करके भी, जल्द कपड़ा तैयार करे, उसके लिए उनके उपर देखभाल करने के लिए बुनकरोँ के खर्च पर चौकीदार नियुक्त किए ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ये चौकीदार बुनकरों को पीटते। उनके विरूद्ध अंग्रेज केम्पस की अदालतों में करारभंग के मुकद्दमें ज़ारी किए जाते; जहाँ बुनकरों को सख्त–कड़ी सजा फरमाई जाती। (इकानामिक हिस्ट्री आफ इण्डिया--ले. आर. सी. दत्त)

राजालोग या नवाब बुनकरों का पक्ष लेने या उनकी सुरक्षा के लिए असमर्थ थे। क्योंकि उनके गले में भी सहायता के करारों के फँदे डाले गए थे।

अत्याचारों का प्रमाण इस कदर बढ़ गया कि हजारों–कारीगरोंने–ढाका की महीन मलमल बुननेवालों ने भी, अपने अंगूठे कटवा डाले जिससे कपड़ें बुनाई कर न पाए और जुलमों--अत्याचारों से छुट्टी पा सके।

☐ अर्थतंत्र का प्रवाह उलट दिया गया !

इन सहायता-करारों का भारी बुरा असर सारे देश पर हुआ। तत्कालीन बिहार के केवल छह जिलों में ६४,७६८ कपड़े बुनने की शालें बेकार हो गई और १४,३०,५२६ कताई करनेवाली स्त्रियोंने चरखे बंद कर अपनी कायमी सहायक आमदानी गँवा दी।

चारों वर्णों की स्त्रियाँ अपने अवकाश के समय, चर्खे चला कर पूरक आमदानी प्राप्त करती थीं, और परिवार के लिए जरूरी कपड़ा भी पा लेती थीं। (मोन्टगेमरी मार्टिन-कृत–हिस्ट्री आफ इस्टर्न इण्डिया)

यह तो सिर्फ छह जिलों में फैलो बेकारी के आंकडे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हैं । सहायता के इन करारोंने, वास्तव में तो समुचे भारत के अर्थतंत्र को तहस-नहस कर डाला था ।

जो देश यूरप-एशिया में कपडे की भारी निर्यात करता था, उस देश को, अपना निजी उत्पादन बंद कर अपनी जरूरत के लिए कपडे की आयात करने के लिए आज मजबूर होना पड़ा । अर्थतंत्र का सारा प्रवाह ही उलट-पुलट हो गया । आश्चर्य की बात यह है कि कितना जल्द यह प्रवाह उलट गया ।

ई. स. १७९३ में इंग्लेण्ड केवल १५६०-०० रुपयों की किंमत का कपड़ा यहाँ भेज सका था। पाँच सालों में तो आयात बढ़ावा हुआ और ४४,३६० रुपयों के मूल्य के कपडे की आयात हुई ।

दूसरे पाँच वर्षों में-यानी कि ई. स. १८०३ में तो बढ़ कर २,७८,७६० रूपयों की हुई । १८१३ में आयात का मूल्य दस लाख रुपयों का हुआ । यह आयात बढ़ कर १८५९ में रु. ९,९५,०८,८३० और १८७७ में रु. १९,३१,००,२२० तक पहुँची । (आर. सी. दत्त कृत इकानामिक हिस्ट्री आफ इण्डिया, वोल्युम-१, पृष्ठ-१७६, वोल्युम-२, पृष्ठ २४८)

☐ प्रजा के प्रत्येक स्तर में विदेशी फंदा !

हमारे किसान भी सहायता के इस षड्यंत्र से बच नहीं पाए । उन्हें सहायता के मधुर नाम की ओट में उधार पैसे देकर, उत्तमोत्तम गेहूँ को चार–छह आनों के भाव में खरीद

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कर बाद में उनमें से बिस्कीट बना कर एक रुपया प्रति रतल (४० रूपए=१ मन) के हिसाब से हमें देते। आधुनिकता के दिखावेमें उत्साहपूर्बक बिस्कीट खाने में गौरव महसूस करनेवाले भी इस देशमें जीवित थे।

दूसरे विश्वयुद्ध के फलस्वरुप उन्हें इस भूमि को छोड देने के लिए विवश होना पड़ा; लेकिन वे उनकी शिक्षा के विषैले बीज़ बो गए हैं, उनके फल पैदा हो गए थे और उनके सहारे पुनः उनकी सहायता के फंदे, प्रजा के प्रत्येक स्तर में गलेमें फंसाए जा रहे हैं। कौन बचायेगा हमारी प्रजा को, इन कुटिल फँदों से ? भगवान ही जाने......!

□ □ □

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस पुस्तक पढ़ने के बाद आपको
जो विचार और संवेदन
ऊठे हों उसे लिखनेका
आपको हार्दिक
निमंत्रण
हैं

एक हाथ से दूसरे हाथ तक ये पुस्तक को पहुँचाते रहिए। यह कहीं पडा न रहें उसका ध्यान रखें। कबाट में उसे कैद मत करना.... तो अनेकों के जीवन के रूप और रंग यह पुस्तक पलट देगा और हमें तो सिर्फ निमित्त बनकर विपुल पुण्यबन्धकी ल्हाण मिलती रहेगी।

पता

कमल प्रकाशन ट्रस्ट
जीवतलाल प्रतापशी
संस्कृति भवन
२७७७, निशापोल, झवेरीवाड,
रिलीफ रोड, अहमदाबाद-१.
फोन : ३३८७२३ C/o. ३८० १४३

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भारतीय प्रजा की नयी पीढ़ी में, रोकेट गतिसे व्याप्त विकृति के झंझावात में से उबारने के लिए कटिबद्ध, अंग्रेजी-गुजराती माध्यम द्वारा, १० वीं कक्षा तक व्यावहारिक शिक्षा देने के साथ, आर्यावर्त के धर्म और संस्कृति का पूरा परिचय देनेवाला सैंकडों युवा-कार्यकरों द्वारा संचालित, वर्धमान संस्कृतिधाम का गौरवान्वित

भव्यतम सर्जन,

तपोवन

स्थल : नवसारी (दक्षिण गुजरात)

प्रारंभ : जुलै, १९८३

क्या आप इस सुयोजना में, किसी भी प्रकार का सहयोग देना चाहते हैं ?

तो

आज ही उसकी सविस्तर जानकारी और परिचय प्राप्त करने के लिए संपर्क करें-

"वर्धमान संस्कृतिधाम"

'प्रभावतीबहन छगनभाई सरकार संस्कृतिभवन'

६, धनमेन्शन, ए०जी० स्ट्रीट,
ऑपेरा हाउस, बम्बई-४००००४
टे० नं० ३६१७२०

अथवा

"वर्धमान संस्कृतिधाम"

चैतन्य निवास
वैद्य मुहल्ले के सामने
सयाजी रोड, नवसारी
टे० नं० ३९५९

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

'कमल प्रकाशन ट्रस्ट' की ओरसे प्रकाशित पुस्तकों के प्राप्तिस्थानः

(१) 'वर्धमान संस्कृतिधाम'
प्रभावती बहन छगनलाल सरकार,
संस्कृति-भवन,
६. धनमेन्शन,
अवन्तीकाबाई गोखले स्ट्रीट,
आपेरा हाउस बम्बई-४
फो. नं. ३६१७२०

(२) श्री जैन प्रकाशन मंदिर,
जसवंतलाल गिरधरलाल
दोशीवाडा की पोल,
कालुपुर,
अहमदाबाद-३८०००१

* मुख्य कार्यालय *
कमल प्रकाशन ट्रस्ट
जीवतलाल प्रतापसी संस्कृति भवन
२७७७, निशापोल,
झवेरीवाड, रिलिफरोड,
अहमदाबाद-३८०००१
फो. नं. ३३९७२३, ३८०१४३

(३) अखिल भारतीय संस्कृति रक्षकदल,
चंदनबहन केशवलाल संस्कृतिभवन,
गोपीपुरा, सुभाषचौक, सूरत

(४) अमरशी लक्ष्मीचंद कोठारी,
एस. टी. स्टेन्ड के पास
शंखेश्वर, वायाः हारिज

(५) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ
जैन पुस्तक भंडार,
एस. टी. स्टेन्ड के पास,
शंखेश्वर
वायाः हारिज

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यदि वातावरण में प्रदूषणों का प्रसार करनेवाले वर्तमान उद्योग चिन्ताजनक बने हैं तो, समग्र चित्त प्रदेश में–चेतातंत्र में, जीवन में, आत्मा में, खतरनाक दूषण फैलानेवाले चलचित्रों के प्रति, अभिभावक वर्ग, गंभीरता से सोचते क्यों नहीं ? सभी 'सीने' (पाप) की जो माँ है, उसीका नाम 'सिनेमा' है न !

अरे, गांधीभक्त !

इतना अवश्य पढें । 'हिन्द स्वराज' के गांधीजी के शब्द (आशय-सार रुपमें)

"मैं जिस प्रकार का स्वराज दिलाना चाहता हूँ, उसके लिये भारत के लोग तैयार नहीं हुए । उन्हें तो संसदीय पद्धति का स्वराज्य चाहिए । अब मुझे लोगों की चाहत का स्वराज्य प्राप्त करना होगा ।

लेकिन मे यह स्पष्ट बताये देना चाहता हूँ कि ब्रिटन के संसदीय ढंग से चलनेवाले स्वराज्य द्वारा हिन्दुस्तान पायमाल होकर ही रहेगा ।"

अब देख लें प्रत्यक्ष बरबादी का तांडव नृत्य ! कैसे अजीब ढंगसे खेली जा रही है, यह धूर्तविद्या !

□ □ □ □ □

तीस साल पहले की पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाया जाता था कि 'सुख समय में उन्मत्त न बनें, दुख में निराश न हो । सुख दुःख सदा
स्थायी नहीं [illegible] वर्तमान में काली
है कुतिया, [illegible] प्रकार का स्वराज दिलाना चाहता हूँ, [illegible] है ! देश के
संस्कारप्रेमी [illegible] तैयार नहीं हुए । उन्हें तो संसदीय पद्धति
[illegible] लोगों की चाहत का स्वराज्य प्राप्त [illegible]

[illegible] ष्ट बताये देना चाहता हूँ कि [illegible] विजयजी
[illegible]

आवरण : पपु प्रिन्टर्स अमदाबाद-१. फोन २३०६२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust